श्रीश्रीगुरु गौरांगौ जयतः

श्रीश्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी महाराज

आनन्दपुर
जिला मेदनीपुर,
04 – 04 – 1978

स्नेह भजनेषु,

आपका दिनांक 28 – 3 – 78 का पत्र प्राप्त हुआ। परन्तु मैंने पहले जिस पत्र का उत्तर दिया था उसमें आपके इस पत्र का उल्लेख नहीं कर पाया क्योंकि आपका ये पत्र अन्य पत्रों की गठरी के साथ मिल गया था। यह समाचार सुनकर बहुत प्रसन्न्ता

हुई कि आप कुछ सेवकों ने मिलकर व स्थानीय सज्जन लोगों की सहायता लेकर निष्कपटता के साथ गौर-आविर्भाव (महाप्रभु जी जन्म तिथि) महोत्सव विषेश समारोह के साथ सम्पन्न किया।

निष्कपट सेवा-चेष्टा रहने से, उसकी सेवा-चेष्टा (भक्ति-भाव) ग्रहण करने के लिए स्वयं भगवान आग्रह करते हैं (अर्थात स्वयं भगवान आगे आ

जाते हैं।) निष्कपट-सेवावृत्ति भक्त एवं भगवान को आन्नद प्रदान करने वाली होती है। तुम्हारा द्रव्य व अर्थ भी काफी संग्रह हुआ था। तुम लोग उत्सव आदि में व विषेश धर्म सभा में आफिसरों व धनाढ् व्यक्तियों के लिए चिन्तित नहीं होना क्योंकि सज्जनगण साधुओं से सम्मान, अच्छा खाना व अच्छे वास-स्थान की आशा नहीं

करते। सिर्फ प्रीति पूर्ण व्यवहार मिलने से ही वे सुखी होते हैं।

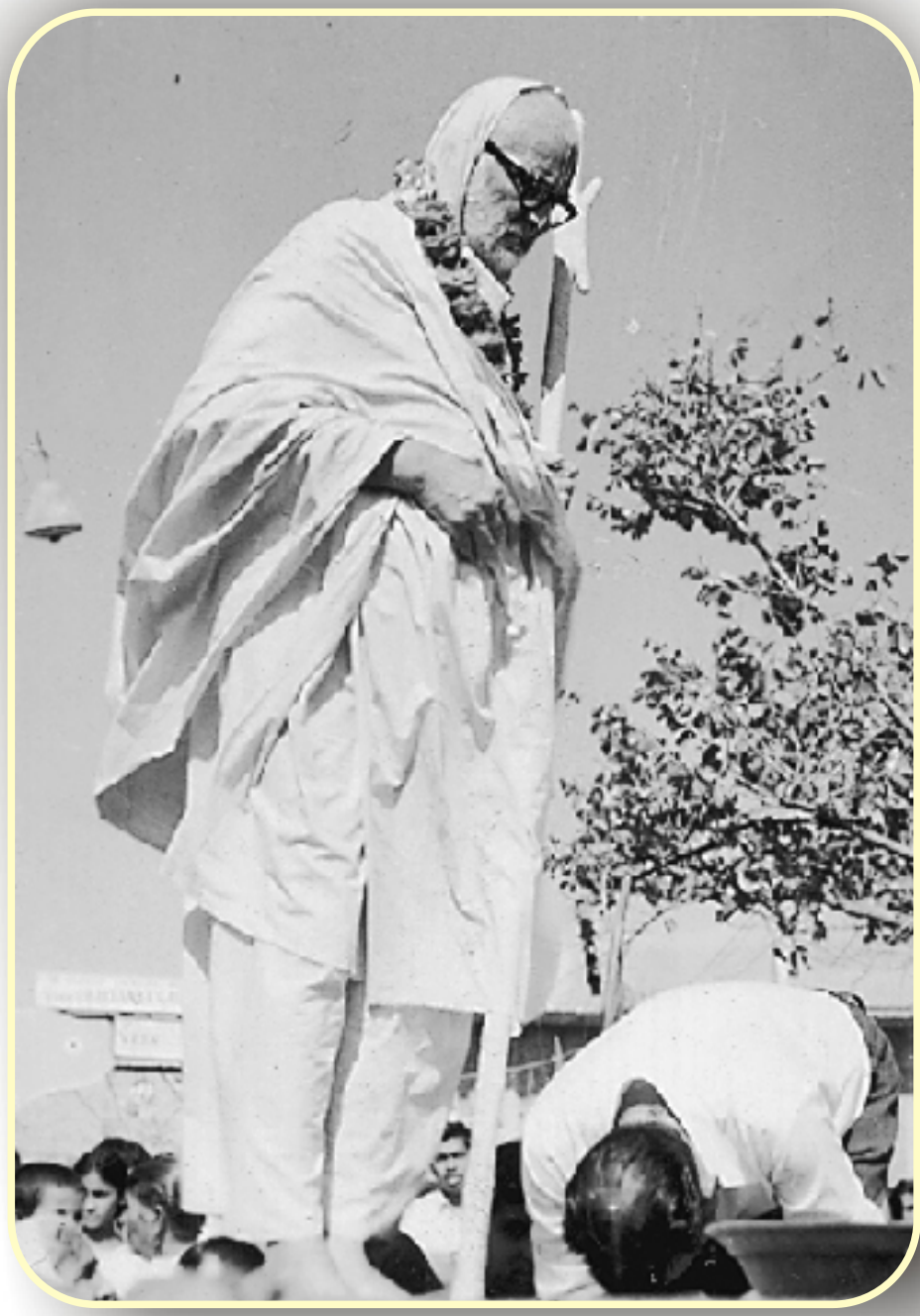

मैं आशा करता हूँ कि तुम लोग यत्न-परायण होने से त्रिपुरा राज्य में भी श्री चैतन्य महाप्रभु जी की कृपा की विशेषताऐं, सज्जनगण एवं सुशिक्षित विचार परायण व्यक्तियों की उपब्धि कर सकोगे जैसे वे मठ की सेवा में सब प्रकार से सहायता करें।

तुम सब मेरा स्नेहाशीर्वाद जानना।

नित्य शुभाकाँक्षी,
श्री भक्तिदयित माधव

श्रील परमगुरुदेव